आदर्शों की पूजा या पाखंड

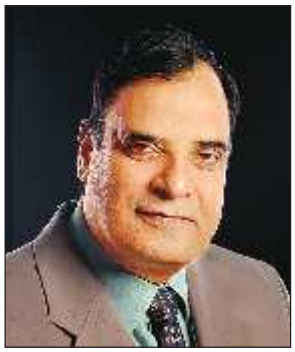

आलोक मेहता

मुजफ्फरनगर के हाल के दंगों के बाद नेताओं के दौरे हुए और टेलीविजन चैनलों पर गंभीर आरोप-प्रत्यारोप लगते रहे। लेकिन अलग-अलग खेमों में बंटे नेता क्या दंगे के तत्काल बाद 'सर्वदलीय' एकजुटता के साथ उस क्षेत्र में 'गांधीवादी पदयात्रा' नहीं कर सकते थे? आजादी के तत्काल बाद बंगाल में भारी सांप्रदायिक हिंसा हुई और इसी दौरान प्रदेश मंत्रिमंडल शपथ ग्रहण के तत्काल बाद महात्मा गांधी का आशीर्वाद लेने पहुंचा। तब महात्मा गांधी ने उनसे कहा था 'सत्ता से सावधान रहें। सत्ता बुद्धि भ्रष्ट करती है। अपने को तड़क-भड़क से बचाइए। ध्यान रहे कि आप गांव के निर्धनों की सेवा के लिए अपने पदों पर हैं।' गांधी जयंती पर राजनेता क्या इस आदर्श वाक्य के पालन की इच्छा व्यक्त करना चाहेंगे? कांग्रेस, भाजपा, समाजवादी या केजरीवाल की 'आम आदमी पार्टी' के शीर्ष नेता मोबाइल, फेसबुक ट्विटर, टेलीविजन पर निर्भर हो गए हैं। जनता से दूरियां बढ़ना क्या शुभ संकेत हैं?

अक्तूबर सामाजिक-राजनीतिक पर्व का महीना है। गांधी जयंती, लालबहादुर शास्त्री जयंती, नवरात्रि, विजयादशमी, ईदुज्जुहा और सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती पर देश के विभिन्न भागों में माल्यार्पण के साथ नमन, कार्यक्रम, उत्सव के आयोजन होंगे। महापुरुषों के आदर्शों की चर्चा होगी। जनता के बीच पहुंचने की इच्छा रखने वाले राजनीतिक दलों के नेता तथा कार्यकर्ता अवसर के अनुरूप 'टोपी', कुर्ता, दुपट्टा पहनकर विश्वास दिलाने की कोशिश करेंगे कि वे ही असली आदर्शवादी हैं। महात्मा गांधी तथा लालबहादुर शास्त्री के नाम और आदर्शों को लेकर हर दल के नेता बड़े-बड़े दावे करते हैं। लेकिन क्या सामान्य जन उनकी बातों और व्यवहार में विरोधाभास को नहीं समझ पाते हैं? समाज में व्यवस्था के लिए कोई सत्ता अपरिहार्य है। लेकिन सत्ता के गुण स्वीकारने को कितने लोग तैयार हैं। केंद्र सरकार ने सितंबर के अंतिम सप्ताह में सरकारी खर्चों में 10 प्रतिशत कटौती के फैसले की घोषणा की। सामान्य श्रेणी में हवाई जहाज की यात्रा या पांच सितारा होटलों में सरकारी समारोह न करने से क्या बहुत बड़ी बचत और सादगी साबित हो जाएगी? आपको याद हो तो डेढ़-दो वर्ष पहले भी तत्कालीन वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी तथा कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी सामान्य श्रेणी में हवाई यात्रा करके सहयोगियों को रास्ता दिखा चुके थे। आर्थिक संकट आज रातोंरात नहीं आया है। फिर भी मंत्री और अफसरों ने अपनी सुख-सुविधाओं में कोई कटौती नहीं की। वीडियो कांफ्रेंसिंग के युग में अफसर मीटिंग के नाम पर देश-दुनिया का दौरा करते रहते हैं। कागज पर सरकारी खर्च में कमी की घोषणा भले ही हो जाए, चतुर अधिकारी अपने पद की धौंस दिखाकर एअर इंडिया में श्रेणी 'अपग्रेड' करा ही लेते हैं। मंत्रियों के साथ परिजन, सचिवों की बारात सरकारी या दलालों के खाते से यात्राओं में कोई कमी नहीं करते हैं। संसद में किसानों और गरीबों पर गंभीर बहस के समय कितने मंत्री और सांसद उपस्थित रहते हैं? मुजफ्फरनगर के हाल के दंगों के बाद नेताओं के दौरे हुए और टेलीविजन चैनलों पर गंभीर आरोप-प्रत्यारोप लगते रहे। लेकिन अलग-अलग खेमों में बंटे नेता क्या दंगे के तत्काल बाद 'सर्वदलीय' एकजुटता के साथ उस क्षेत्र में 'गांधीवादी पदयात्रा' नहीं कर सकते थे? आजादी के तत्काल बाद बंगाल में भारी सांप्रदायिक हिंसा हुई और इसी दौरान प्रदेश मंत्रिमंडल शपथ ग्रहण के तत्काल बाद महात्मा गांधी का आशीर्वाद लेने पहुंचा। तब महात्मा गांधी ने उनसे कहा था 'सत्ता से सावधान रहें। सत्ता बुद्धि भ्रष्ट करती है। अपने को तड़क-भड़क से बचाइए। ध्यान रहे कि आप गांव के निर्धनों की सेवा के लिए अपने पदों पर हैं।' गांधी जयंती पर राजनेता क्या इस आदर्श वाक्य के पालन की इच्छा व्यक्त करना चाहेंगे? कांग्रेस, भाजपा, समाजवादी या केजरीवाल की 'आम आदमी पार्टी' के शीर्ष नेता मोबाइल, फेसबुक-ट्विटर, टेलीविजन पर निर्भर हो गए हैं। जनता से दूरियां बढ़ना क्या शुभ संकेत हैं?

विजयादशमी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्थापना दिवस है। संघ इस समय सर्वाधिक चर्चा में है और केवल सांस्कृतिक हिंदू राष्ट्रवाद का आदर्श बताने वाले संगठन ने राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का रास्ता अपना लिया है। तभी तो भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व और प्रधानमंत्री पद की उम्मीदवारी के लिए संघ के शीर्षस्थ नेता दिल्ली के गलियारों में निरंतर माथापच्ची करने लगे हैं। दिल्ली जैसे महानगरों के मोहल्लों में अब शाखाएं बहुत कम लगती हैं या रविवार को गिने-चुने लोग 'ध्वज वंदन' करते हैं। संघ-भाजपा में राजनीतिक नेतृत्व के मुद्दे पर हुई खींचातानी से यह जग जाहिर हो गया कि अब संघ 'व्यक्ति-पूजा' को उचित मानने लगा है। जबकि संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार व्यक्ति पूजा की प्रचलित परंपरा को हिंदू समाज की सबसे बड़ी बुराई मानते थे। वह इसे समाज के पतन का कारण भी मानते थे। डॉ. हेडगेवार ने कहा था- 'व्यक्तिवाद ने राष्ट्रवाद के भाव को विस्थापित कर दिया है। संघ व्यक्तिवाद को मिटाकर शुद्ध राष्ट्रवाद स्थापित करना चाहता है।' इसी तरह संघ के ही प्रचारकों और स्वयंसेवकों द्वारा बनाई गई विश्व हिंदू परिषद ने 'मंदिर' को राजनीतिक मुद्दा बना दिया है। यही नहीं स्पष्ट घोषणा की है कि उसके स्वयंसेवक भाजपा का साथ 'मंदिर निर्माण' की शर्त पर ही दे रहे हैं और 'अपना प्रधानमंत्री' आने पर पहली प्राथमिकता 2015 तक भव्य मंदिर निर्माण की होगी। जबकि संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार आस्तिक होते हुए भी नियमित मंदिर जाकर या घर में संध्या पूजा-अर्चना करने वालों में नहीं थे। वह 'समाज सेवा' को असली पूजा मानते थे। वह अपने किसी संगठन में एक व्यक्ति विशेष के संपूर्ण वर्चस्व को अनुचित मानते थे। वह 'नाक से बड़ी नथ' को खतरनाक कहते थे। संघ के लिए निर्धारित दस सूत्रों में से एक यह है कि 'व्यक्तिगत आकांक्षाओं से अधिक राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को महत्व देना।' लेकिन संघ तो अब व्यक्तिगत आकांक्षाओं को ही समाज के भविष्य से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। संघ से राजनीति में सक्रिय हुए बड़े-बड़े प्रचारक और स्वयंसेवक अब सादगी-संस्कार की बातें दरकिनार कर पांच सितारा जीवन शैली और संघ अथवा इससे जुड़े संगठनों की अरबों रुपयों की इमारतों एवं संपत्ति पर विशेष ध्यान देने लगे हैं। जिस तरह कांग्रेसियों ने गांधी धोती-कुर्ता-टोपी केवल 'जयंती पर्व' अथवा अधिवेशनों में दिखावटी प्रयोग तक सीमित कर दी है, संघ की निकर और काली टोपी के बजाय शीर्षस्थ नेता शैली के 'डिजाइनर कुर्ते' की देश-विदेश में ब्रांडिंग पर ध्यान दिया जा रहा है।

दूसरी तरफ कांग्रेस-भाजपा से हटकर तीसरा विकल्प देने का दावा कर रहे समाजवादी नेता और कार्यकर्ता राममनोहर लोहिया के सिद्धांतों की अपेक्षा अपने फार्मूले गढ़कर दशहरे और ईद को एक हद तक सांप्रदायिक रंग दे रहे हैं। पर्व-त्योहार पर वर्ग विशेष के साथ जुड़ने के लिए लाल टोपी के बजाय 'सफेद टोपी' या 'पगड़ी' पहनना शायद स्वीकारा जा सकता है, लेकिन दो संप्रदायों के खूनी संघर्ष के बाद एक समुदाय की टोपी पहनकर कोई मुख्यमंत्री समाजवादी तथा सामाजिक समरसता का दावा कैसे कर सकता है? डॉ. लोहिया तो सांप्रदायिकता एवं पाखंड दंभिता के कट्टर विरोधी थे। मुजफ्फरनगर के सांप्रदायिक उपद्रव के बाद विभिन्न दलों की घटिया पैंतरेबाजी संपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए कलंक है। इस दृष्टि से अक्तूबर के उत्सवों की धूमधाम के बीच राजनीतिक वर्ग को कुछ क्षण ध्यान लगाकर आत्म मंथन भी करना चाहिए।

alokmehta7@hotmail.com